Þoehdí kEiksLV mRiknuÞ& vfrfjDr vkenuh dk lk/ku

lfjp;&

श्री बनवारी लाल s/o श्री नाथू राम गांव व डाकघर नांगल पठानी, खण्ड जाटूसाना जिला रेवाड़ी (हरियाणा) के मध्यमवर्गीय उन्नत"ील किसान है। इनकी ि"ाक्षा मीडील पास है तथा 1.5 एकड़ खेती करने योग्य भूमि है। सीमित भूमि और परिवार की आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत ठीक न होने की वजह से 8वीं कक्षा के बाद आगे पढ़ नहीं पाये और परिवार की आव"यकताओं को पूरा करने के लिए खेती के साथ इससे सबदद्ध व्यवसाय अपनाने की सोची। श्री बनवारी लाल ने परिवार व रि"ातेदारों से आर्थिक सहायता लेकर 5दुधारू गाय व भैंस खरीदी और वे प"ुपालन व्यवसाय से भी जुड़ गये। जिसकी वजह से आय का अतिरिक्त सृजन होने लगा। लेकिन बनवारी लाल कुछ नया करने की चाह रहे थे इसलिए वे यंत्र में प्रि"ाक्षण प्राप्त करने के लिए सरकारी संस्थानों की तला"ा करने लगे ताकि प्रि"ाक्षण प्राप्त करके एक नया व्यवसाय शुरू कर सकें।

;kstuk] dk;kZUou vkj lgk;rk&

श्री बनवारी लाल, समाचार पत्रों के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपुरा में सन् 2002–03 से संपर्क में आये और खेती व प"ुपालन के साथ केन्द्र द्वारा संचालित कौ"ाल विकास परिक्षण कार्यक्रमों के बारे में सलाह ली और फिर इन्होनें मधुमक्खी पालन, बकरी पालन, संवर्धन, म"ारूम उत्पादन, वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन प्रि"ाक्षण कार्यक्रमों में से वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन में कौ"ाल विकास प्रि"ाक्षण प्राप्त करने का निर्णय लिया और सन् 2002–2003 में ही इन्होनें यह प्रि"ाक्षण प्राप्त किया। इसके साथ–साथ इन्होनें समय–समय पर जैविक खेती और प"ुपालन आदि पर भी प्रि"ाक्षण प्राप्त किया। कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपूरा के र्मागद"ान में उन्होनें फसलों की उन्नत किस्मों से खेती प्रांरम्भ की तथा प"ुओं को संतुलित खिलाई–पिलाई, खनिज मिश्रण मुक्त घर पर बांटा तैयार करना, नियमित टीकाकरण करवाना, समय–समय पर पेट के कीड़े मारने की दवाई देना व वर्ष भर हरे चारे का प्रयोग करना आदि शुरू किया। बनवारी लाल के घर में खाली जगह प्रर्याप्त होनें की वजह से इन्होनें प"ुओं के लिए आवास बनवा लिया जिससे उनकी देखरेख व अन्य कार्यो में आसानी होने लगी और बाकी रिक्त पड़ी हुई जगह का उपयोग करने के लिए वर्मीकम्पोस्ट यूनिट की स्थापना करने की ठानी। सन् 2003–04 में शुरूआत में इन्होनें 15 वर्मी बेड के लिए कार्य प्रारम्भ किया और केन्द्र के वैज्ञानिकों की सलाह लेकर केंचुए खरीदे। घर में प"ुपालन व्यवसाय की वजह से इन्हें गोबर के लिए ज्यादा भागदौड़ नहीं करनी पड़ी और 15 बेड से इन्होनें वर्मीकम्पोस्ट बनाना शुरू किया। इस प्रकार बनवारी लाल इस व्यवसाय में भी सफल हुए और वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन शुरू हो गया। इन्होनें वर्मीकम्पोस्ट का प्रयोग प्रारंभ में अपने खेत पर शुरू कर दिया और रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग बहुत कम कर दिया। शुरूआत के 2–3 वर्षो में इनकों अपनी फसलों से ठीक–ठाक उत्पादन मिला लेकिन निंरतर वर्मीकम्पोस्ट के प्रयोग से बनवारी लाल ने अपने खेत की उपजाऊ क्षमता बढ़ा दी। आज बनवारी लाल 1.5 एकड़ जमीन से जैविक खेती के माध्यम से बाजरा, सरसों व गेहूँ का उत्पादन कर रहे है और जैविक उत्पादन होने के कारण इनको आमदनी में भी काफी अधिक मिलने लगी और जैविक खेती का रेवाड़ी का क्षेत्र में प्रर्याय बन गये है। 2वर्षो बाद बनवारी लाल ने वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन का विस्तार करने की सोचने लगे और इन्होनें पक्के शेड बनवाकर बेड़ों की संख्या 15 से 35 कर दी और इन्होनें वर्मीकम्पोस्ट बनाने व पैक करने की म"ाीन भी खरीद ली जिससे समय औा श्रम की बचत हुई और अपना एक ब्रांड भी बनाया। ये "श्री गणे"ा" वर्मीकम्पोस्ट के नाम से बैग में खाद की पैंकिग

करके बचते है। वर्तमान समय में ये 50 बेड से वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन कर रहे है। इन्होनें सन् 2014 में बेड्स में पानी देने का नया तरीका भी ईजाद किया। स्प्रिंकलर की नोज़ल द्वारा पानी देने के लिए पाइपलाइन बनाई और सभी वर्मी बेड्स में एक समान पानी देने लगे, जिससे इनको पानी, समय और श्रम में लगभग 40%, 40%, 30% की बचत हुई। वर्मी बेड्स में पानी देने का यह नवाचार इनको काफी फायदेमंद साबित हुआ।

mRiknu&

श्री बनवारी लाल वर्तमान समय में (सन् 2017–18) 50 वर्मी बेड्स की इकाई से वर्ष में 4 बार खाद का उत्पादन कर रहे है और वर्ष भर ये 1100 बैग(50 किलो प्रति बैग) वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन कर रहे है और "श्री गणे"ा" वर्मीकम्पोस्ट ब्रांड के नाम से 300रू प्रति बैग की दर से ये बिक्री कर रहे है। रेवाड़ी व आसपास के क्षेत्रों में इनके वर्मीकम्पोस्ट की अलग पहचान है और वर्मी बेडस में स्प्रिंकलर की नोजल द्वारा पानी देने के नवाचार की वजह से काफी सराहें भी जा रहे है। वर्मीकम्पोस्ट के साथ–साथ प"ुपालन व जैविक खेती के माध्यम से भी आमदनी प्राप्त कर रहे है। सन् 2017–18 में ये वर्मीकम्पोस्ट व्यवसाय 2,25,000रू प्राप्त कर रहे है और साथ में प"ुपालन व्यवसाय से 1,30,000 की शुद्ध आमदनी प्राप्त कर रहे है। खरीफ और रबी सीज़न मे ंखेती द्वारा फसलों से 1,30,000 की शुद्ध आय प्राप्त कर रहे है।

ifj.kke&

श्री बनवारी लाल के अथक प्रयासों द्वारा इन्होनें ये मुकाम हासिल किया और अपनी इन उपलब्धियों एवं कृषि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यो एवं वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन में स्प्रिंकलर की नोज़ल द्वारा पानी देने का नवाचार की वजह से क्षेत्र में प्र"ांसनीय कार्य किया हैं। इनका नाम कृषि विभाग, रेवाड़ी द्वारा सर्वोच्च उद्यम"ील किसान पुरूस्कार के लिए अनुमोदित किया हैं। आज बनवारी लाल खेती व प"ुपालन के साथ–साथ वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन व्यवसाय को अपनाकर परिवार की आर्थिक स्थिति सदृढ़ की ओर सालाना 4,85,000रू शुद्ध आय प्राप्त कर रहे है।

iHkkko&

बनवारी लाल खेती के साथ–साथ प"ुपालन और वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन व्यवसाय चुनकर एक सफल कियान बनना इनकी लगन,दृढ़ इच्छा"ाक्ति और काम के प्रति समर्पण द"ाता हैं और अपने साथ में कई गुणा ईजाफा करके अन्य किसान प्रेरित हुए है।

lan"k&

खेती के प्रति सकारात्मक सोच, दृढ़ इच्छा"ाक्ति और कृषि की नवीनतम वैज्ञानिक तकनीक व नवाचार के उपयोग खेती से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है तथा कौ"ाल विकास प्र"िक्षण प्राप्त करके सहबद्ध शुद्ध करके किसान अपनी आय को दोगुनी कर सकती है।